Issn 0973-9777 वर्ष - 6 अंक - 2 मार्च-अप्रैल 2012

भारतीय शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी

मासद्वयी अन्तर्राष्ट्रीय शोध समग्र पत्रिका

www.onlineijra.com

आन्वीक्षिकी

भारतीय शोध पत्रिका

मासद्वयी अन्तर्राष्ट्रीय शोध समग्र पत्रिका

प्रधान सम्पादिका

डॉ. मनीषा शुक्ला,maneeshashukla76@rediffmail.com

पुनर्निरीक्षक संपादक

प्रो. विभा रानी दुबे,काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी, उ.प्र.,भारत

डॉ. नागेन्द्र नारायण मिश्र,इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद,उ.प्र.,भारत

सम्पादक

डॉ. महेन्द्र शुक्ल,डॉ. अंशुमाला मिश्रा

सम्पादक मण्डल

डॉ. राधा वर्मा, डॉ चित्रा सिंह तोमर, डॉ. प्रमोद कुमार मिश्र, डॉ. प्रभा दीक्षित, डॉ. गीता यादव, डॉ. भास्कर प्रसाद द्विवेदी, डॉ. गीता देवी गुप्ता, ज्योति प्रकाश, डॉ. पद्मिनी रविन्द्रनाथ, डॉ. मधु पाराशर, डॉ. प्रवेश भारद्वाज, डॉ. नुपुर गोयल, डॉ. नितिश श्रीवास्तव, मनोज कुमार सिंह, सरिता वर्मा, उमाशंकर राम, अवनीश शुक्ला, विजयलक्ष्मी, कविता, धर्मेन्द्र शुक्ल

अन्तर्राष्ट्रीय सलाहकार मण्डल

रेव डोडामगोडा सुमनासार (श्रीलंका), वेन केन्डागेले सुमनारांसी थेरो (श्रीलंका), रेव टी धम्मारतना (श्रीलंका), पी.त्रिराची सोडामा (श्रीलंका), फ्रा च्युतिदेश सैन्सोम्बट (बैंकाक,थाईलैंड), फ्रा बूनसर्मस्त्रिथा (थाईलैंड), डॉ. सीताराम बहादुर थापा (नेपाल), मोहम्मद सौरजाई (जाबोल, ईरान), माजिद करीमजादेह (ईराक), डॉ. अहमद रेजा केईखाय फरजानेह (जाहेडान, ईरान), मोहम्मद जारेई (जाहेडान, ईरान), मोहम्मद मोजटाबा केयाहफरजानेह (जाहेडान, ईरान), डॉ. होसैन जेनाबदी (सिस्तान एवं बलूचिस्तान, ईरान), मोहम्मद जावेद केयाह फरजानेह (जाबोल, ईरान)

प्रबन्धक

महेश्वर शुक्ल,maheshwar.shukla@rediffmail.com

सारांश एवं सूचीपत्र

मोतीलाल बनारसीदास सूचीपत्र वाराणसी, मोतीलाल बनारसीदास सूचीपत्र दिल्ली, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय पत्रिका सूचीपत्र वाराणसी, सेन्ट्रल न्यूज एजेंसी सूचीपत्र दिल्ली, डी.के.पब्लिकेशन सूचीपत्र दिल्ली, नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ साइंस कम्यूनिकेशन एण्ड इन्फारमेशन रिसोर्स सूचीपत्र दिल्ली, नोएडा कॉलेज ऑफ फिज़िकल एजूकेशन सूचीपत्र गौतमबुद्ध नगर

पाठकों से

आन्वीक्षिकी,भारतीय शोध पत्रिका प्रत्येक दो माह (जनवरी, मार्च, मई, जुलाई, सितम्बर एवं नवम्बर) पर एम.पी.ए.एस.वी.ओ.मुद्रण वाराणसी उ.प्र. भारत द्वारा प्रकाशित की जाती है। एक वर्ष में आन्वीक्षिकी,भारतीय शोध पत्रिका 6 भाग हिन्दी एवं 6 भाग अंग्रेजी एवं 3 अतिरिक्तांकों के भाग में प्रकाशित की जाती है। डॉक खर्च दर के सम्बन्ध में जानकारी हेतु सम्पर्क करें।

वार्षिक पाठक मूल्य दर

संस्थागत : भारतीय 4,000+500/-डाक शुल्क,एक प्रति 500+51/- डाक शुल्क,वैदेशिक : 6000+डॉक खर्च,एक प्रति 1000+डाक शुल्क
व्यक्तिगत : 2,500+500/-डाक शुल्क,एक प्रति 500+51 डाक शुल्क सहित,वैदेशिक 5000+डाक शुल्क,एक प्रति 1000+डाक शुल्क

विज्ञापन एवं निवेदन

विज्ञापन के संदर्भ में जानकारी प्राप्त करने हेतु प्रधान सम्पादिका के पते पर संपर्क करें। आन्वीक्षिकी एक स्ववित्तपोषित पत्रिका है,अत: किसी भी प्रकार का आर्थिक सहयोग सराहनीय होगा। कृपया अपनी सहयोग राशि चेक अथवा ड्राफ्ट के माध्यम से निम्नलिखित पते पर प्रेषित करें।

सभी पत्राचार निम्नलिखित पते पर ही प्रेषित करें-

बी.32/16 ए. 2/1,गोपालकुंज,नरिया,लंका वाराणसी उ.प्र. भारत,पिन कोड 221005 मोबाइल नं. 09935784387,
टेलीफोन नं. 0542-2310539.,E-mail : maneeshashukla76@rediffmail.com,www.anvikshikijournal.com
मिलने का समय : 3-5 दिन में(रविवार अवकाश)

पत्रिका संयोजन

महेश्वर शुक्ल,maheshwar.shukla@rediffmail.com

प्रकाशन

एम.पी.ए.एस.वी.ओ.मुद्रण

मनीषा प्रकाशन

(पत्रावली संख्या V-34564,पंजीकरण संख्या 533/ 2007-2008 बी.32/16 ए. 2/1,गोपालकुंज,नरिया, लंका वाराणसी उ.प्र. भारत)

आन्वीक्षिकी

भारतीय शोध पत्रिका

वर्ष-6 अंक-2 मार्च-2012

शोध प्रपत्र

पुराणों में पर्यावरण -मनीषा 1-3
इतिहास के माथे पर चिपकी एक सामयिक -कथा [कलिकथा वाया बाइपास] -डॉ. प्रभा दीक्षित 4-10

समाज का जातिगत परिप्रेक्ष्य और गौतम बुद्ध -डॉ. अनुभा जायसवाल 11-13
सत्याग्रह और दुराग्रह : गाँधी के परिप्रेक्ष्य में एक दृष्टि -डॉ. श्रुति दुबे 14-18

गाँधी जी के आर्थिक विचार : एक अध्ययन -राघव कुमार 19-23
बिहार में सन् 1937 के प्रान्तीय असेम्बली के चुनाव का एक समीक्षात्मक अध्ययन -डॉ. विनीता कुमारी 24-30

भारतीय अर्थव्यवस्था पर ब्रिटिश शासन का प्रभाव : एक समीक्षात्मक अध्ययन (1857-1947) -उमाशंकर राम 31-33
पंजाब के जनपदीय सिक्कों का लिपियशास्त्रीय अध्ययन -डॉ. स्वाती श्रीवास्तव 34-38

लोक संस्कृति के प्रतीक और प्रतीकार्य -मनोज कुमार सिंह 39-45
भारत के मजदूर वर्ग और राष्ट्रीय आन्दोलन के संदर्भ में एक संक्षिप्त अध्ययन -उमाशंकर राम 46-48

व्रत, पर्व एवं पर्यावरण -श्रीमती ऋतु मालवीय एवं डॉ. मीनू अग्रवाल 49-54
विश्व राजनीति में पश्चिमी एशिया के योगदान का पक्ष -उमाशंकर राम 55-58

धार्मिक-सामाजिक मूल्य एवं पर्यावरण -श्रीमती ऋतु मालवीय एवं डॉ. मीनू अग्रवाल 59-65
भारतीय काव्यों में पर्यावरणीय संरक्षण के संकेत -डॉ. मनीषा शुक्ला एवं डॉ. अंशुमाला मिश्रा 66-72

मनुवाद के विरोधी एवं समतामूलक समाज के आधुनिक प्रणेता : माननीय कांशीराम -अनीता कौल 73-75
राजभाषा हिन्दी और उसका संवैधानिक आयाम -डॉ. मोनालिषा बनर्जी 76-80

प्रिंट ISSN 0973-9777, वेबसाइट ISSN 0973-9777

पत्रावली संख्या V-34564,पंजीकरण संख्या 533/2007-2008 भारतीय शोध समग्र पत्रिका (2012) **6,59-65**
आन्वीक्षिकी ISSN 0973-9777 प्रकाशनार्थ स्वीकृत 3 फरवरी 2012

धार्मिक-सामाजिक मूल्य एवं पर्यावरण

श्रीमती ऋतु मालवीय* एवं डॉ. मीनू अग्रवाल

लेखक का घोषणा-पत्र

भारतीय शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी ISSN 0973-9777 मासद्वयी अन्तर्राष्ट्रीय शोध समग्र पत्रिका में प्रकाशनार्थ प्रेषित *धार्मिक-सामाजिक मूल्य एवं पर्यावरण* शीर्षक लेख / शोध प्रपत्र की लेखिका, *श्रीमती ऋतु मालवीय एवं मीनू अग्रवाल, शोध छात्रा, प्राचीन इतिहास, उ. प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश) भारत एवं [शोध निर्देशिका] रीडर, प्राचीन इतिहास विभाग, एस. एस. खन्ना महिला महाविद्यालय इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश) भारत* घोषणा करते हैं कि लेखिका के रूप में इस लेख की सभी सामग्रियों की जिम्मेदारी लेते हैं, क्योंकि हमने स्वयं इसे लिखा है और अच्छी तरह से पढ़ा है और साथ ही अपने लेख / शोध प्रपत्र को भारतीय शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी ISSN 0973-9777 मासद्वयी अन्तर्राष्ट्रीय शोध समग्र पत्रिका में प्रकाशित होने की स्वीकृति देते हैं। यह लेख / शोध प्रपत्र मूल रूप में या इसका कोई अंश कहीं और नहीं छपा है और न ही कहीं मैंने इसे छपने के लिए भेजा है। यह हमारी मौलिक कृति है। हम भारतीय शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी ISSN 0973-9777 मासद्वयी अन्तर्राष्ट्रीय शोध समग्र पत्रिका के सम्पादक मण्डल को अपने लेख के संशोधन एवं सम्पादन की पूर्ण अनुमति देते हैं। आन्वीक्षिकी में लेख प्रकाशित होने पर इसके कापीराइट का अधिकार सम्पादक भारतीय शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी ISSN 0973-9777 मासद्वयी अन्तर्राष्ट्रीय शोध समग्र पत्रिका को देते हैं।

भारत में शिक्षा तथा ज्ञान की खोज केवल ज्ञान प्राप्त करने के लिए ही नहीं अपितु 'धर्म' के मार्ग पर चलकर 'मोक्ष' प्राप्त करने का एक क्रमिक प्रयास था। भारत के ऋषिमुनियों ने अपने चतुर्दिक व्याप्त प्रकृति की छमता का उपयोग अनुभवजन्य ज्ञान, चिन्तन मनन और संरक्षण की सचेत विचारधारा के साथ किया। इसलिए उन्होंने आश्रमों, गुरुकुलों की स्थापना प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण, कोलाहल से दूर एकान्त वन्य प्रदेश में की। नदियों, झरनों, जलप्रपातों, तालाबों से निरन्तर निर्झरण की शिक्षा, कन्दमूल फलों के सेवन से प्राकृतिक विटामिनों की उपलब्धता, मन्द सुगन्ध हवाओं की शुद्धता से श्वसन क्रियाओं की अबाध्यता तथा वल्कल वस्त्रों के प्रयोग से एलर्जी मुक्त जीवन की प्राचीन परम्परा पर्यावरणीय संचेतना का दृष्टान्त है।

मानव मूल्य के रूप में प्रत्येक मनुष्य में उदारता और कृतज्ञता का गुण होना अति आवश्यक है। मनुष्य को यह समझना होगा कि प्रकृति अपने हित के लिए अपने संसाधनों का प्रयोग कभी नहीं करती, वह तो स्वयं मानवों पर निर्भर करती है, मानवों के लिए असीमित संसाधनों को उपलब्ध कराती है। ऐसी परिस्थिति में मानव को प्रकृति के प्रति कृतज्ञ ाता का भाव रखकर सौहार्द एवं संतोष के साथ प्रकृति के साथ सन्तुलन बनाये रखना एवं प्रकृति का संरक्षण करना चाहिये।

भारतीय संस्कृति में सदैव से ही धारणा रही है कि प्रकृति संचेतन है, प्रकृति भी सुखदु:खात्मक है, उपेक्षित अवस्था में प्रकृति विध्वंस मचाती है, पोषित होने पर उपकृत होती है, धार्मिक साहित्य में अभिव्यक्त मानव मूल्यों के निर्धारण में प्रकृति सदैव मातृवत रक्षणीया है, पालनीया है "माता भूमि पुत्रो अहम पृथिव्या:। अप्रसन्नो विनाशाय प्रसन्न सर्वसिद्धये।" [अथर्ववेद 12,1,26]

* शोध छात्रा, प्राचीन इतिहास, उ. प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश) भारत
** [शोध निर्देशिका] रीडर, प्राचीन इतिहास विभाग, एस. एस. खन्ना महिला महाविद्यालय इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश) भारत। E-mail : meenu.agrawal@hotfmail.com

© लेखक 2012,मनीषा प्रकाशन एवं शोध विवेक संस्था,एम.पी.ए.एस.वी.ओ.मुद्रण एवं आन्वीक्षिकी सदस्य सहसंयोजन से प्रकाशित,सर्वाधिकार सुरक्षित मनीषा प्रकाशन एवं शोध विवेक संस्था। आज्ञा हेतु कृपया सम्पर्क करें : E-mail : maneeshashukla76@rediffmail.com, इस प्रपत्र को www.onlineijra.com पर पढ़ें

यजुर्वेद में निर्देश है कि भूमि की हिंसा न की जाये "पृथ्वी मातर्मा हिंसी मा अहं त्वाम्" [यजुर्वेद, 10,23] भारतीय परम्परा में पर्यावरण संरक्षण की दिशा में वृक्षों, वनस्पतियों, नदियों, सूर्य, चन्द्र आदि को देवतुल्य माना गया। "औषधया वै पशुपति:" अर्थात् औषधियाँ शिव रूप हैं। [शतपथ ब्राह्मण 6, 1, 3, 12]

शतपथ ब्राह्मण में उल्लेख है कि वृक्ष, वनस्पतियाँ [औषधियाँ] पशुपति अर्थात् शिव के रूप हैं, भगवान शिव का शिवत्व है, वे विष को पीते हैं और अमृत प्रदान करते हैं। वृक्ष-वनस्पति शिव के रूप हैं, ये कार्बन डाई ऑक्साइड [CO_2] रूपी विष पीकर ऑक्सीजन [O_2] रूपी अमृत [प्राणवायु] देते हैं, यह इनका शिवरुप है। शिव का दूसरा रूप रूद्र है यह संसार का नाशक है। यदि वृक्षों को काटा जाता है और प्रदूषण का नियंत्रण नहीं होता, विश्व का संहार अवश्यम्भावी है।

"मनुस्मृतिकार" ने बड़े कारखानों को प्रदूषण का कारण मानते हुए इन्हें लगाना पाप माना है। इनसे वायु प्रदूषण के साथ ही जल प्रदूषण भी होता है। कारखानों का गंदा पानी नदी जलाशयों आदि को दूषित करता है और प्रदूषण फैलाता है "महायंत्रास्य प्रर्वतनम्।" [मनुस्मृति 11, 63, 66]

वृक्ष छेदन-महत् पाप

भारतीय मानवीय मूल्यों में वृक्षों को व्यर्थ काटना मना है। वृक्षों को अकारण काटने पर दो प्रकार के मानवीय व्यवहारों का प्रतिपादन विधिनिषेधों में किया गया :

1. प्रायश्चित विधान
2. दण्डविधान

"मनुस्मृति" में फल देने वाले वृक्षों और सपुष्प लतादि के काटने पर 'प्रायश्चित' करने का विधान इनके संरक्षण की ओर मानव का ध्यान आकृष्ट करता है। [मनुस्मृति, 11, 142-143]

"मनुस्मृति" के अनुसार हरे वृक्षों को ईंधन के लिए काटना पाप है, हरे वृक्षों को काटना हिंसा है यह अपराध दण्डनीय है। [मनुस्मृति, 11, 63, 66 तथा 8, 285], विष्णु स्मृति में उल्लेख है कि किस प्रकार के वृक्षों को काटने पर कितना दण्ड देना चाहिए। [विष्णु स्मृति, अध्याय -5]

वृक्षारोपण परम्परा -धार्मिक सामाजिक मूल्यों की परम्परा का अनिवार्य अंग

मनुस्मृति निर्देश देती है कि गाँव की सीमा पर तालाब या कुआँ, बावड़ी कुछ न कुछ अवश्य बनवाना चाहिए, साथ ही वट, पीपल, नीम, ठाक, सेंभल, साख ताल एवं दूध वाले वृक्षों को भी लगाना चाहिए। "सीमा वृक्षांस्य कुर्वीत न्यग्रोधाश्वत्थ किंशुकान। शामली सालतालांश्च क्षीरिणश्चैव पादपानां।।" [मनुस्मृति, 8, 246]

प्राचीन मूर्तियों में अशोक वृक्ष की पूजा एवं दोहद क्रिया अंकित मिलती है। विभिन्न वृक्षों के रोपण उनसे प्राप्त होने वाले परिणाम किस प्रकार की भाग्यवृद्धि करते हैं और हमारे ऋषि मुनियों ने इसका उल्लेख विभिन्न स्थानों पर किया है। कुछ प्रमुख वृक्ष एवं उनके रोपण के प्रतिफलों का उल्लेख भारतीय प्राचीन साहित्य में मिलता है, संक्षेप में कुछ का उल्लेख इस प्रकार है :

वृक्षारोपण के प्रतिफल

अश्वत्थ	धन प्राप्ति, रोगों का नाश
केतकी व केशर	रिपुनाश
अशोक	दु:खनाश
प्लक्ष	यज्ञफल, ज्ञान प्राप्ति
निम्ब	दीर्घायु, सूर्यकृपा
जम्बू	धन व कन्या रत्न
विल्व	दीर्घायु, शिव कृपा

पलाश	ब्रहमतेज व स्वर्ग प्राप्ति
खदिर व शमी	आरोग्य प्राप्ति
वट	मोक्ष प्राप्ति आम्र अभीष्ट कामनाप्रद
भुवाकट (सुपारी)	सिद्धि प्रदायक
तेंदू व मौलसिरी	कुल वंश वृद्धि
बकुल	पाप नाशक
वंजुल	बलबुद्धि प्रदायक
दाडिम	स्त्री सुख
कदम्ब	लक्ष्मी प्राप्ति
चन्दन	पुण्य प्राप्ति
नारियल	बहु पत्नी
मधूक व अर्जुन	अन्न प्राप्ति
वेग	लुटेरो से रक्षा
धातकी	स्वर्ग प्राप्ति

भाग्य वृद्धि के साथ-साथ पेड़-पौधों का रोपण व्याप्त रोगों के उपचार में सहायक बनता है। प्रदूषण जनित बिमारियों के उपचार में प्रयुक्त वनस्पतियों का वर्णन प्राचीन धर्म ग्रंथों में विस्तार से दिया गया है जिनका संक्षिप्त उल्लेख निम्न रुप से किया जा सकता है। [अथर्ववेद, 8.7, 20, 6.10, 1.3, 6.127, 4.37, 3.6]

रोगों के उपचार में वनस्पतियाँ

रोग	वनस्पतियाँ
ज्वर रोग	देवदार, धन्याक, निम्ब, मुस्तक, पटौय, हर्र, बहेड़ा, आमलक, गिलोय,
चन्दन, हरिद्रा, कष्टकारि, नागरूला, आदि।	
श्वांस व खासी	नागर, गिलोय, पुष्कर, नागरूला आदि।
केश रोग	एलामासी, कुष्ठ, मुरा, गुंजा, आम्र, करंज, आमलक, देवदारू, शतपुष्पा,
हर्र, वहेड़ा, भृंगराज, बीजपूरक	
शिर व कर्ण रोग	वचा, हिंगु, कुष्ठ, नागेश्वर, शतपुष्पा, देवदास, मालती पुष्प, अर्क आदि।
नेत्र रोग	शोभांजन, आमलक, अशीतिलिल, मरीच, (काली मिर्च), पिपली, शुष्ठ
आदि।	
नासिका रोग	घोषाफल, दूर्वा, दाडिम, अलक्तक, हरीतिकी आदि।
मुख रोग	जाती, मस्तक, इलायची, ताम्बूल, धान्याक आदि।
दंत रोग	केसर, गुंजा, काकजंधा, स्नुही, हरिताल, रक्तचंदन हिंगु, हरीतिकी
आदि।	
अनिन्द्रा रोग	काक, जंघा, मधुक, यष्टि, मुस्त, मरीच आदि।
व्रण रोग	आम्र, शरपुष्पा, लज्जालुका, पाठ, काकजंधा
अजीर्ण रोग	या, शुष्ठी, हरिता, निम्ब, पिप्पल, मरीच, विहंगभद्रं मुस्त

अश्वत्थ रोपण एवं महत्व-धार्मिक सामाजिक मूल्य

अथर्ववेद के अनुसार जहाँ पीपल और बरगद के पेड़ होते हैं वहाँ प्रबुद्ध लोग रहते हैं। वहाँ कृमि नहीं आ सकते।

‘श्रीमद्‌भागवत महापुराण’ के अनुसार द्वापर युग में गोलोक जाने से पहले युगेश्वर कृष्ण पवित्र अक्षयवट वृक्ष के नीचे बैठकर ध्यानमग्न हुए थे। "श्रीमद्‌भागवत महापुराण" इसकी छाया जहाँ तक पहुँचती है तथा संघर्ष से प्रवाहित जल जहाँ तक पहुँचता है, वह क्षेत्र गंगा के समान पवित्र होता है। युद्ध भूमि में भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा था "अश्वत्थ सर्व वृक्षाणाम्।" अर्थात् सब वृक्षों में मैं ही पीपल हूँ।

'अश्वत्थ गौतम' में इसकी महिमा वर्णित है तथा इसे "सर्व देवमय" कहा गया है "अश्वत्थ पूजितो यत्र पूजिता: सर्व देवता:।"

महर्षि शौनक ने 'अश्वत्थोपनयन' नामक व्रत में विधान से बताया है कि कोई भी किसी शुभ दिन पीपल के पौधे का रोपण करे, उसका सिंचन करे, उसके साथ पुत्रवत् व्यवहार करे, उसका यज्ञोपवीत करे और उसकी रक्षा करे तो वंश परम्परा में बाधा नहीं पहुँचती। इसकी पूजा से पितृगण मोक्ष प्राप्त करते हैं "अश्वत्थ स्थापितो येन तत्कुल स्थापितं तत:। धनायुषां समृद्धिस्तु पितृन् समृद्धरेत्।।

पीपल के पत्तों पर लोग रामनाम लिखते हैं पीपल की छाया में पंचायत जुटाने का कारण यह बताया जाता है कि वादी या प्रतिवादी वहाँ कभी झूठ नहीं बोल सकता ; चूँकि यह पेड़ अकेला है, विरागी है तटस्थ है। पीपल मानव जीवन से जुड़ा वृक्ष है लम्बे जीवन का प्रतीक है क्योंकि इसकी दीर्घायु होती है लोक आस्था है। इसमें ब्रह्मा, विष्णु का वास रहता है। बिहार, उत्तर प्रदेश और अन्य हिन्दी भाषी राज्यों में उपनयन संस्कार के समय कहीं-कहीं इसकी भी पूजा होती है। अश्वत्थ वृक्ष में मूल से दशहस्त चतुर्दिक क्षेत्र पवित्र पुरुषोत्तम होता है। इसका नाम गज पादप भी है क्योंकि हाथी तथा वानर इसके पत्ते बड़े चाव से खाते हैं। पीपल के बारे में लोक मान्यता है कि इसका रोपण यदि करे तो सिंचन अवश्य करे।

भारतीय ज्योतिष के अनुसार वृहस्पति के प्रतिकूल होने की स्थिति में पीपल की सनिधा से हवन करने का विधान है, जिससे वृहस्पति शुभ फल देता है कुछ क्षेत्रों में पुत्र की प्राप्ति हेतु पीपल की उपासना का विधान है। पुत्र चाहने वाली स्त्रियाँ सायंकाल पीपल वृक्ष के नीचे दीपक जलाती हैं, वैधव्य योग होने पर कन्याओं की प्रतीकात्मक शादी पीपल से कराये जाने का प्रावधान है। हिन्दू धर्म की मान्यतानुसार मृतक को अन्तिम संस्कार के लिये ले जाते समय मार्ग में पीपल के वृक्ष के नीचे कुछ देर का विश्राम दिया जाता है तथा अन्तिम संस्कार के सारे कर्मकाण्ड पीपल वृक्ष के नीचे सम्पादित होते हैं। बुक्सा जनजाति में आज भी वृक्ष पूजा का सम्बन्ध पूर्वजों की आत्मा की संतुष्टि से माना जाता है। इसी कारण इनके गाँव में उत्तर पूर्व में पीपल या वट के वृक्ष अवश्य मिलते हैं। अकाल की स्थिति में पीपल की उपासना, बकरे की बलि देकर करते हैं। [डॉ. मीनू अग्रवाल -भारत में वृक्ष पूजा एवं जल संचयन की परम्परा, पुस्तक से उद्धृत]

वट वृक्ष-देव तुल्य

वट वृक्ष अपने प्ररोहो के लिए प्रसिद्ध है इसकी जड़ क्षैतिज रूप में दूर तक फैल जाती है। यह पेड़ त्रिमूर्ति का प्रतीक है इसकी छाल में विष्णु, जड़ों में ब्रह्मा और शाखाओं में शिव की कल्पना भारतीय सांस्कृतिक विचारधारा में मिलती है। जटाधारी वट वृक्ष साक्षात् जटाधारी पशुपति शिव का रूप भी माना जाता है। अग्निपुराण के अनुसार बरगद उत्सर्जन को दर्शाता है, इसलिए संतान की चाहत रखने वाले इसे पूजते हैं इसे काटा नहीं जाता। अकाल में इसके पत्ते जानवरों को खिलाये जाते हैं। लोक मान्यता है कि बरगद के एक पेड़ काटे जाने पर प्रायश्चित के तौर पर एक बकरे की बलि देनी पड़ती है। एक अन्य कथा के अनुसार जब सावित्री ने सत्यवान की प्राण रक्षा के लिए वट वृक्ष की पूजा की तथा व्रत रखा तो व्रत के पूरे होने के बाद पारण के समय उन्होंने वट के पत्ते में पानी तथा वट वृक्ष की कली को निगला था आज भी सुहागिने वट अमावस्या व्रत में पूजा के बाद वट वृक्ष की कली को निगलती हैं।

तुलसी मलेरिया रोधक वृक्ष -धार्मिक महत्ता

तुलसी के वृक्ष को औषधि के रूप के साथ-साथ धार्मिक महत्व के रूप में भी देखा जाता है। कहा जाता है कि जिस घर के आंगन तुलसी का पौधा होता है एवं उसकी पूजा होती है वहाँ यमदूत भी प्रवेश नहीं करते हैं। हिन्दू परम्परा के अनुसार मृत्यु शय्या पर पड़े व्यक्ति को यदि अंत में गंगा जल एवं तुलसी की एक पत्ती मुँह में डाल दी जाती है तो उसे मोक्ष मिल जाता है। उसे यमग्रास से मुक्ति मिल जाती है। मान्यता है कि तुलसी की हरियाली से घर की समृद्धि दिखती है। सुहागिन स्त्रियाँ इसे अपने अखण्ड सौभाग्य की शक्ति के रूप में पूजती है। तुलसी की विशेषतायें एवं गुणों

को निम्नांकित श्लाकों से भली-भाँति स्पष्ट देख सकते हैं "पत्रं पुण्यं फलं मूलं शाखात्वं स्कन्ध संज्ञितम्। तुलसी संभवं सर्वपावनं मृत्तिकादिम्।। [पद्म पुराण, उत्तरखण्ड -24, 2] "तुलसी काननं चैव गृहे यस्यावतिष्ठते। तद्गृहं तीर्थभूतं हि नायान्ति यमानिंकराः।।" [कल्याण देवतांक ; 1990, पृष्ठ संख्या 224 से उद्धृत] "तुलसी तरुमूले च पुण्य देशे सपुण्यपदे। अधिष्ठानं तु तीर्थानां सर्वेषां च भविष्यति।।" [ब्रह्म वैवर्त, प्रकृति खण्ड 21, 38]

तुलस्योपनिषद् में कहा गया है कि तुलसी को व्यर्थ न तोड़ें "वृथा न छिन्द्यात्दृष्टा प्रदक्षिणा कुर्यात्।"

तुलसी का पौधा शुद्धता की, पवित्रता की दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जाता है। भारतीय समाज में भगवान [नारायण] का भोग बगैर तुलसी पत्र डाले अपूर्ण रहता है। यह वायुमण्डल का शुद्धिकरण तथा अत्यधिक ऑक्सीजन देने वाला पौधा है। इसके पास हानिकारक जीवाणु-विषाणु नहीं पनपते, तुलसी चिकित्सीय दृष्टि से मलेरिया रोधक गुणों से सम्पृक्त है। इसके औषधीय गुण से हर कोई परिचित है। एक लोकोक्ति में इसके महत्व को देख सकते हैं "आँगन वेदिया बनाइला / तुलसी लगाइला हो / तेहि वेदिया बैइठल नारायण / माँगन कुछ माँगीला।"

मंत्रों के जरिये प्रकृति से संवाद

मंत्रों एवं प्रकृति के बीच गहरा सामंजस्य है। प्रकृति से मंत्रों के जरिये संवाद होता है। पंचधारी भंग से पंचतत्व शुद्ध होते हैं। भंग से एक दिव्य भाव उत्पन्न होता है तथा ये शक्ति प्रदान करते हैं हमारे धर्म ग्रंथों के अनुसार मंत्रों के जाप एवं उनके उच्चारण उनके बोलने के तरीके में गजब की शक्ति होती है जो व्यक्ति को किसी भी परिस्थिति में संतुलन रखना और परिस्थितियों को स्वयं के अनुसार करने में सहायक होते हैं।

इसी प्रकार शिखा को हिन्दू धर्म का एक उपलक्षण माना गया है। प्रकृति और विज्ञान के नियमों को ध्यान में रखकर शिखा शास्त्र तैयार किया गया है। शिखा का स्थान ब्रह्मरंध [सिरपर] होता है। ब्रह्मरंध्र ज्ञान, क्रिया और इच्छा की त्रिवेणी है। ब्रह्मरंध्र अधिक ठंडापन स्पर्श करता है। अतः वहाँ केश का होना आवश्यक है। बाहर ठंडी हवा होने पर यही केश राशि ब्रह्मरंध्र में आर्द्रता बनाये रखती है। शिखा मनुष्य को ब्रह्माण्डीय ऊर्जा से जोड़ती है। शिखा में गांठ धार्मिक अनुष्ठान के समय लगाने से मंत्र स्पंदन से उत्पन्न होने वाली ऊर्जा शरीर में एकत्रित होती है। शिखा ग्रंथि में चामुण्डा देवी का अधिष्ठान माना गया है। चामुण्डा ध्वनि और प्रदूषण रोकती है। अतः 'तिष्ठ देवि शिखा मध्ये' प्रार्थना उनके लिए की जाती है। [अमर उजाला, 5/6/2010, किसन लाल शर्मा]

ज्योतिष विद्या के अनुसार पर्यावरण को दूषित करने से हमारे ग्रह भी हमें प्रभावित करते हैं, उनका दुष्प्रभाव हम पर पड़ता है, पर्यावरण संरक्षण से हम इससे बच सकते हैं। पर्यावरण हमारे शरीर पर भी असर करता है। हमारा शरीर पंचतत्वों से मिलकर बना है। 'क्षिति जल पावक गगन समीरा' वायु तत्व में कुपित होने से सांस लेने में दिक्कत होती है। पृथ्वी तत्व के मजबूत होने से भौतिक साधनों की वृद्धि होती है कमजोर होने से ठीक उल्टा होता है। जल तत्व कमजोर होने से लोग हाइपर होते हैं, पेट व आंतों की समस्या होती है। अग्नितत्व के गड़बड़ होने पर भी पेट की समस्या होती है।

"धात्री" [आंवला] को सम्पूर्ण लोकों में पवित्र माना गया है। इसका फल भगवान वासुदेव को प्रिय है। इसके सेवन से आयु वृद्धि, रसपान से धर्म का संचय तथा स्नान करने से दरिद्रता दूर होती है, ऐश्वर्य में वृद्धि होती है। जिस ग्रह में आंवला विद्यमान रहता है, वहाँ ब्रह्मा, विष्णु व लक्ष्मी का वास होता है। इसके सेवन से व्यक्ति पापों से मुक्त होकर विष्णु धाम को प्राप्त करता है।

धात्री के समान "रूद्राक्ष" भी पवित्र है तथा इसके दर्शन व स्पर्श से धर्म, बल, काम व मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति होती है, पापों का नाश होता है, मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है। स्कन्ध पुराण के अनुसार मदार की उत्पत्ति भगवान सूर्य से बतायी गयी है। इसके जड़ में भगवान शंकर का वास है सूर्य ग्रहण की शान्ति हेतु मदार की लकड़ी का हवन में प्रयोग किया जाता है। वैधव्य प्रयोग होने पर कहीं-कहीं कन्या का विवाह मदार के पेड़ से कराने की परम्परा है।

पौराणिक मान्यता के अनुसार ब्रह्मा जी पार्वती जी के श्राप से पलाश वृक्ष हो गये। यज्ञोपवती संस्कार में ब्राह्मण को इस वृक्ष का दण्ड [दण्ड अर्थात् दण्डा] दिया जाता है, क्योंकि इसमें ब्रह्मा जी का वास है।

आदिवासियों में विवाह के समय महुए के पेड़ पर सिंदूर लगाकर बधू अटल सुहाग का वरदान लेती है और आम के पेड़ को प्रणामकर सफल वैवाहिक जीवन की कामना करती है।

जीव जन्तु एवं देवीय सम्बन्ध

प्राचीन भारतीय धर्म ग्रंथों में कुछ जीव-जन्तुओं को दैवीय माना गया है। गरुड़ (पक्षी) ऐरावत (हाथी) उच्चैश्रवा (अख), वाजुनि व शेषनाग (सर्प), सिंह आदि को कृष्ण की विभूतियां कहा गया है तथा बहुत से जीव-जन्तुओं को देवी-देवताओं का वाहन माना गया है। इस प्रकार इस रुप से जीव-जन्तुओं को धार्मिक संरक्षण प्रदान किया गया है। स्पष्टत: देवी-देवताओं एवं जीव-जन्तुओं में सम्बन्ध सहिष्णुता एवं सह अस्तित्व का द्योतक है जो पश्चात्य धर्मों से पूर्णत: भिन्न है।

पशुवध निषेध

प्राचीन भारतीय धर्म ग्रंथों में 'पशु-पक्षी वध को निषिद्ध' माना गया है तथा जैव प्राणियों के प्रति दया व प्रेम मैत्री का उपदेश दिया गया है। अहिंसा धर्म सभी धर्मों में उत्तम है। "सर्वभूत दयावन्तो विश्वास्या: सर्व जन्तु वु। त्यक्त हिंसा समाचरास्ते नरा: स्वर्गगामिन:।।" [महाभारत, 13, 144, 9 से 10 तथा 13, 144, 40]

कुछ प्रमुख देवी-देवता एवं उनसे सम्बन्धित जीव-जन्तु जो हमे देवी देवता एवं पर्यावरण के सम्बन्ध का संदेश देते हैं निम्नवत् हैं :

पशु	देवी–देवता
सिंह	दुर्गा, बुद्ध
हस्ति	इन्द्र
हंस	सरस्वती
गरूड	विष्णु, कृष्ण
मत्स्य	काम
अश्व	सूर्य
गौ	कृष्ण
मकर	वरूण
मेष	मंगल
महिष	यम
वन्य हंस	ब्रह्म
वृषभ	शिव
मूषक	गणेश
सर्प	शिव
कपि	हनुमान
मयूर	कार्तिकेय
वृषभ श्वान एवं पक्षी	दत्तात्रेय
गिद्ध	शनि

धर्म पर्यावरण की उपज है तथा मानवीय क्रिया कलापों पर उसका (भौतिक पर्यावरण) प्रभाव प्रत्यक्ष दृष्टिगत होता है। मनुष्य जब इस पृथ्वी पर अवतरित हुआ तो वह भूतल के विविध स्वरुपों एवं अदृश्य प्राकृतिक शकितयों से भयभीत हुआ। क्योंकि इस भूतल पर असंख्य प्राकृतिक शक्तियाँ कार्य करती रहती है। मानव अचेतन मन को बार-बार आक्रान्त करने वाली प्राकृतिक घटनायें निरन्तर होती रही होगी। मानव की सरल प्रवृत्तियों को उत्तेजित करने में प्राकृतिक वातावरण एवं उसके आधार पर अचेतन मन में युग-युगान्तर तक घनीभूत होती रही। बाद में प्राकृतिक शक्तियों के प्रति मानव

मन में काल्पनिक और भ्रान्ति मूलक धारणाओं का विकास होता गया।

जल को प्रदूषणमुक्त रखना

जल को प्रदूषण मुक्त रखने के लिए वैदिक काल में जल में फैलने वाले कृमियों को दूर करे के लिए अजशृंगी, गुग्गुल, पीलूमाँसी, औक्षगन्धी, प्रमोदनी आदि औषधियों तथा पीपल, वट, शिखण्डी, अर्जुन आदि वृक्षों का प्रयोग होता था तथा इसके साथ 'जल संचयन को भी प्रोत्साहित' किया गया है जैसे,"यासु राजा वरुणो यासु सामेशयी विश्वदेवा यासूर्जमदन्ति। वैश्वानरो यास्वग्निः प्रविष्टस्ता आपो देवीरिह मामवतु।।"

मानवीय मूल्य- उदारता, कृतज्ञता, सहनशीलता

मानव मूल्य के सन्दर्भ में प्रत्येक मनुष्य में 'उदारता' एवं कृतज्ञता का गुण होना भी अति आवश्यक है। मनुष्य को यह समझना चाहिए कि प्रकृति अपने हित के लिए अपने संसाधनों का प्रयोग कभी नहीं करती वह तो स्वयं मानव पर निर्भर है। वह तो स्वयं मानव के लिए संसाधन उपलब्ध करती है। ऐसी परिस्थिति में मानव को प्रकृति के प्रति 'कृतज्ञ ाता' का भाव रखकर सौहार्द एवं संतोष के साथ उसके साथ संतुलन बनाये हुए संरक्षण का ध्यान रखते हुए जीवन यापन करना चाहिए। हमारे प्राचीन धर्म संस्कृति में जल का दान महादान माना गया है वह भी ग्रीष्म ऋतु में इसके लिए अनेक धर्मग्रंथों में कुँआ, तालाब, प्याऊ लगाने को धर्म से जोड़कर देखा गया है। किन्तु इन तथ्यों को यदि गूढ़ता से देखा जाये तो ये धार्मिक कार्य न केवल सामाजिक गतिविधियों हिस्सा बनते हैं अपितु जल भण्डारण एवं जल संचयन को भी प्रोत्साहन देते हैं। हमारे ऋषि मुनियों ने इस कार्य को धर्म से जोड़कर समाज में 'सहिष्णुता' का भाव जागृत किया है।

परम्परा एवं राष्ट्रीयता

वृक्षों एवं जीव-जन्तु का हमारे सामाजिक जीवन में महत्व इस बात से भी स्पष्ट है कि जैतून की शाखायें 'संयुक्त राष्ट्र की प्रतीक चिन्ह' है एवं 'कबूतर को शांति का प्रतीक' माना जाता है। भारत के सर्वोत्तम सम्मान 'भारत रत्न में प्रतीक चिन्ह पीपल' के पत्ते के आकार का बनना पीपल को राष्ट्रीय धरोहर एवं भारत के गौरव का प्रतीक होना दर्शाता है। इलाहाबाद 'विश्वविद्यालय के मोनोग्राम में वट' वृक्ष का होना भी कमोवेश उसके सामाजिक एवं धार्मिक मूल्यों को दर्शाता है। कौओं, गाय, कुत्तों को पितृपक्ष में पूर्वजों का प्रतीक मानकर उन्हें ग्रास देकर पितरों को संतुष्ट करना जीवजन्तु का सामाजिक धार्मिक क्रिया-कलाप में स्थान की महत्ता को प्रदर्शित करता है। इसी प्रकार अनेकानेक उदाहरण है जो वृक्षों एवं जीवजन्तुओं में सामाजिक जीवन में उनके महत्वपूर्ण योगदान एवं उनके महत्व को परिलक्षित करते हैं।

सहायक स्रोत

अथर्ववेद
शतपथब्राह्मण
मनुस्मृति
विष्णु स्मृति, अध्याय -5
डॉ. मीनू अग्रवाल -भारत में वृक्ष पूजा एवं जल संचयन की परम्परा
पद्म पुराण
कल्याण देवतांक, पृष्ठ संख्या 224
ब्रह्म वैवर्त पुराण
अमर उजाला, 5 / 6 / 2010
महाभारत

लेखकों के लिए निर्देश

शोधपत्र का अनुरोध

लेखक अपना शोधपत्र डॉ. मनीषा शुक्ला ,प्रधान सम्पादिका आन्वीक्षिकी भारतीय शोध पत्रिका को ई-मेल पर प्रेषित करें। (maneeshashukla76@rediffmail.com)

प्राप्त शोधपत्र पत्रिका में प्रकाशन के पूर्व पुनर्निरीक्षित किये जायेंगे। स्वीकृत शोधपत्र कहीं और प्रकाशित नहीं होना चाहिए और न ही उस शोधपत्र का कोई भी भाग प्रधान सम्पादिका के अनुमति के बिना कहीं और प्रकाशित किया जा सकता है। कृपया अपने शोधपत्र की पाण्डुलिपि निम्न भागों में तैयार करें,शीर्षक ;सारांश ;पाण्डुलिपि ;पुस्तक संदर्भ सूची। कृपया पुनर्निरीक्षण की गुणवत्ता में सहायता करने हेतु अपना नाम पता पाण्डुलिपि पर न दें।

शीर्षक :शीर्षक पाण्डुलिपि पर अवश्य दें,किन्तु अपना पूरा नाम,पता,संस्था जहाँ पर अध्ययन अथवा अध्यापन कार्य सम्पादित किया गया हो, आपका विषय,दूरभाष अथवा मोबाइल,फैक्स,ई-मेल पत्राचार हेतु अलग पृष्ठ पर अवश्य दें। उपर्युक्त तथ्य आपके शोधपत्र के शब्द सीमा के अन्तर्गत ही माना जायेगा।

सारांश :कृपया शोधपत्र का सारांश 120 शब्दों में दें।

पाण्डुलिपि :इसके अन्तर्गत मुख्य पाठ्य सामग्री होगी ; जो 5 से 10 पृष्ठ तक होनी चाहिये। शोधपत्र 10 पृष्ठ से (सारांश,शब्द संक्षेप,संदर्भ सूची समेत)अधिक प्रकाशन हेतु स्वीकार नहीं किया जायेगा। अन्यथा वृहद् शोधपत्र(10 पृष्ठ से अधिक) प्रकाशन में देर भी हो सकती है। लेखक को यह बात स्वीकार होनी चाहिए कि शोधपत्र पुनर्निरीक्षण के दौरान किये गये संशोधन उन्हें मान्य होंगे। शोधपत्र प्रकाशन के दौरान त्रुटि की सम्भावना न बने इसका पूरा ध्यान रखा जाता है फिर भी कोई त्रुटि पाये जाने पर लेखक संशोधित रीप्रिंट प्राप्त कर सकता है ; पत्रिका में संशोधन की व्यवस्था नहीं है।

सन्दर्भ वर्णमालाक्रामानुसार :शोधपत्र के समापन पर कृपया संदर्भ वर्णमाला क्रमानुसार दें। पत्रिका का वर्ष,लेखक, पृष्ठ संख्या,भाग इत्यादि विस्तार से दें। पुस्तक शीर्षक या पत्रिका शीर्षक इटालिक दें।

पुस्तक :प्रकाशक का नाम,संस्करण संख्या,प्रकाशन वर्ष,लेखक का नाम,पुस्तक का नाम,पृष्ठ संख्या

पत्रिका :पत्रिका का नाम,लेख का शीर्षक,लेखक का नाम,प्रकाशक का नाम,अंक संख्या/माह,वार्षिक अथवा अर्द्धवार्षिक अथवा मासिक जो भी हो स्पष्ट करें।

समाचार पत्र :प्रकाशक,तिथि,सन् ,पृष्ठ संख्या,

इण्टरनेट :वेबसाइड,पृष्ठ संख्या,मुख्य शीर्षक,अन्त: शीर्षक।

मानचित्र एवं सारणी :मानचित्र एवं सारणी अथवा चित्र शोधपत्र की समाप्ति के अन्त में दें। यह ब्लैक एण्ड व्हाइट ही होना चाहिए। इसका स्पष्ट संकेत पाण्डुलिपि में दें(उदाहरण सारणी संख्या 1)

विशेष :कृपया अपना शोधपत्र ई-मेल करने के बाद डॉक से अवश्य भेजें। अपने शोधपत्र के साथ-साथ अपना वायोडाटा, फोटो,स्वपता लिखा लिफाफा(25 रू के टिकट सहित)भेजें। शोधपत्र यदि हिन्दी भाषा में है तो ए.पी.एस प्रियंका रोमन(ए.पी.एस. कार्पोरेट 2000++)में तैयार सी.डी के साथ दें। शोधपत्र प्राप्त होने के एक सप्ताह के अन्दर लेखक को स्वीकृति पत्र प्रेषित कर दिया जायेगा। ई-मेल से प्राप्त शोधपत्र हेतु ई-मेल से स्वीकृति भेजी जायेगी। शोधपत्र प्रेषित करने के पूर्व प्रधान सम्पादिका से दूरभाष पर अवश्य सम्पर्क करें। सम्पादक मण्डल अथवा सलाहकार समिति में सम्मिलित करने का अंतिम निर्णय संस्था का होगा।

सदस्यों से निवेदन है कि वर्ष में 20 सदस्य पत्रिका से जोड़कर संस्था का सहयोग करें।

Search Research papers of The Indian Journal of Research Anvikshiki-ISSN 0973-9777 in the Websites given below

http://nkrc.niscair.res.in/BrowseByTitle.php?keyword=A

National Knowledge Resource Consortium

www.icmje.org

www.scholar.google.co.in

www.kmle.co.kr

www.fileaway.info

www.banaras.academia.edu

www.www.edu-doc.com

www.docslibrary.com

www.dandroidtips.com

www.printfu.org

www.cn.doc-cafes.com

www.freetechebooks.com

www.google.com

IJRA

ISSN 0973-9777
09739777
₹ 700/-